खण्ड 3: हमारे साथ परमेश्वर का सम्बन्ध

परमेश्वर के तीन निवास स्थल हैं:
स्वर्ग में, अपने संसार में, और अपने लोगों में

पहले खण्ड ''परमेश्वर की असीमितता'' में परमेश्वर की व्यापकता पर ज़ोर दिया गया था। हमने उसके सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, और सर्वशक्तिमान होने पर विचार किया था। यदि हम केवल परमेश्वर को सांसारिक दृष्टिकोण से ही देखें, तो हमारे लिए यह समझना कठिन हो जाएगा कि वह संसार में हमारे जैसे छोटे से कणों के साथ सम्बन्ध क्यों बनाना चाहता है।

दूसरे खण्ड ''हमारे लिए परमेश्वर का संदर्भ'' में हमने उसे सृष्टिकर्त्ता के रूप में और अपने आपको उसके सृजे हुए गए संसार में जीवों के रूप में देखा था। हमें यह अहसास होता है कि परमेश्वर इतिहास में एक नाटकीय भूमिका निभाता है और हम उस ऐतिहासिक नाटक के भाग अर्थात पात्र हैं। फिर हमने ध्यान दिया कि परमेश्वर का सर्वोच्च गुण उसकी पवित्रता है। इसलिए, उसकी सृष्टि में एक नैतिक गुण है। उसका इतिहास जो उसके पूर्व प्रबन्ध की योजना से संसार में कार्य कर रहा है, एक निश्चित *telos* या अन्तिम लक्ष्य के साथ नैतिक दबाव रखता है। वह हमसे उस *telos* की ओर बढ़ने के लिए नैतिक मार्च में भाग लेने की उम्मीद करता है। हमें इस दौड़ को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए उसकी सहायता, उत्साह तथा प्रेम की आवश्यकता है। इसलिए आइए परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध और उस ईश्वरीय सहायता की जो वह हमें देता है, समीक्षा करें।

हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और

समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

पर पहिले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी की अपनी ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे (2 पतरस 1:20, 21)।

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। परन्तु जो सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रकट हों, कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं (यूहन्ना 3:16-21)।